पाठ 12. सुमन एक उपवन के

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों व प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा रचित यह कविता एकता के मोतियों को एक धागे में पिरोए हुए है। कवि संदेश देना चाह रहे हैं कि हमें आपस में एक साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए और अपने सुख-दुख बाँटने चाहिए।

पाठ का सार

कवि देशवासियों से कहता है कि हम सब एक ही मिट्टी में पले-बढ़े हैं। सूरज तथा चंद्रमा सबको समान रोशनी देते हैं। हम सबके रूप-रंग, भाषा, आदि भले ही अलग-अलग हों परंतु हम सब मिलकर एक ही उपवन की शोभा बढ़ाते हैं। सभी लोग एक ही गगन के नीचे रहकर अपने सपनों को सजाते हैं। काँटों के बीच भी मुसकराते रहना, हमारे साहस का प्रतीक है। एक सूत्र में बँधने के बाद ही किसी के गले का हार बना जा सकता है, अकेले नहीं। पुष्पों की तरह ही हमारी सुगंध अमीर-गरीब और राजा-रंक सभी के लिए बराबर है। तभी तो कहा गया है—हम सब सुमन एक उपवन के।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  फूल की तुलना मनुष्य से किस प्रकार की गई है, इसके बारे में विस्तार से बताएँ। हमें आपस में मिल-जुलकर क्यों रहना चाहिए, यह भी बताएँ। 'वसुधैव कुटुंबकम' का व्यापक अर्थ बतलाएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - विराम-चिह्नों की उपयोगिता की चर्चा की जा चुकी है, उसे यहाँ दोहराएँ। अन्य उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।
  - उपसर्ग के बारे में परिभाषा देने से बचते हुए नये शब्द बनाने की क्रिया समझाएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - 'चित्र वर्णन' मौखिक अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। इससे बच्चे की कल्पनाशीलता का विकास होगा।
  - चित्र से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं। बच्चों से किसी बगीचे का या पार्क का चित्र बनवाया भी जा सकता है।